

**रसदाब** पुं. (तत्.) वन. पेड़-पौधों के अंदर जीवनदायक एवं पोषक रस का दबाव जिससे यह रस उनके सभी अंगों में परिचालित होता है। sap pressure

**रसदार** वि. (तत्+फा.) 1. जो रस से युक्त हो, रसीला, स्वादिष्ट जैसे- मौसमी और अनार रसदार फल हैं 2. वह सब्जी जिसमें रस हो या बनाने पर जिसमें रस हो जैसे- तोरी, टमाटर, लौकी आदि 3. शोरबेदार लाक्ष. जिसे सुनकर बहुत मजा आवे, मजेदार जैसे- रसदार कबिता, रसदार कहानी।

**रसदारु** पुं. (तत्.) ऐसे वृक्ष की लकड़ी जिसकी ऊपरी परत नरम या मुलायम होती है।

**रसदोष** पुं. (तत्.) काव्य. 1. काव्य के आस्वादन में बाधक दोष 2. रसानुभूति में बाधक तत्व 3. काव्य में दस रस दोष।

**रसधातु** स्त्री. (तत्.) 1. शरीर की सात धातुओं में से पहली 2. पारा, परदा।

**रसधार** वि. (तत्.) रसिक, रसवेत्ता।

**रसना**<sup>1</sup> अ.क्रि. (देश.) 1. किसी चीज का धीरे-धीरे बहना या टपकना, रिसना 2. किसी द्रव पदार्थ से जल या रस का टपकना 3. स्वाद लेना 4. प्रेम की बातों में लीन होना, आसक्त होना 5. व्याप्त होना।

**रसना**<sup>2</sup> स्त्री. (तत्.) 1. जीभ, जिह्वा 2. रस्सी 3. स्वाद 4. कटि में धारण किया जाने वाला आभूषण, करधनी, तगड़ी 5. घोड़े की लगाम 6. एक औषधि रासना, गंधभद्रा काव्य. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में लघु, गुरु योग से 16 वर्ण होते हैं (न, य, स, न, न व गुरु)

**रसनागर** पुं. (तत्.) 1. रसभरी बातों का अनुभवी, रसिक 2. रसीली बातों का आनंद लेने में कुशल।

**रसनिधि** स्त्री. (तत्.) 1. रस का खज़ाना 2. प्रेम रस से परिपूर्ण 3. प्रेम करने में उदार 4. आनंद का भंडार।

**रसनिष्पत्ति** स्त्री. (तत्.) काव्य. 1. रसास्वादन, रसानुभूति 2. काव्य में निर्दिष्ट स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से सहृदयजनों को होनेवाली काव्यगत सौंदर्यानुभूति।

**रसनीय** वि. (तत्.) 1. जो स्वाद लेने या चखने योग्य हो 2. स्वादिष्ट।

**रसनेंद्रिय** स्त्री. (तत्.) 1. किसी भोज्य/पेय पदार्थ का स्वाद अनुभव करने वाली इंद्रिय, जीभ, रसना 2. स्वाद लेने की इंद्रिय।

**रसनोपमा** स्त्री. (तत्.) काव्य. उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बनी होती है और पहले का उपमेय क्रमशः आगे आगे उपमान होता जाता है।

**रसपर्पटी** स्त्री (तत्.) आयु. पारे और गंधक से तैयारी की गई एक विशेष प्रकार की पपड़ी जिसके चूर्ण को औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

**रसप्रबंध** पुं. (तत्.) 1. काव्य. वह काव्य या नाटक जिसमें एक ही विषय का अधिकांश पद्यों में वर्णन किया गया हो 2. प्रबंधकाव्य 3. नाटक।

**रसभंग** पुं. (तत्.) 1. आनंद में विघ्न 2. शुभकार्य में बाधा 3. प्रेमविच्छेद 4. अशुभ घटना, अनर्थ उदा. रावन सभा ससंक सब देखि महा रसभंग -रामचरित मानस काव्य. नाटक या महाकाव्य/खण्ड काव्य आदि के अंतर्गत आई रस-निष्पत्ति में बाधा जिससे रस का परिपाक उचित रूप से संभव न हो।

**रसभरी** स्त्री (तत्.) 1. 'बेर' के समान आकार वाले रसीले फल का एक पौधा या फल 2. रसयुक्त या रस से भरी एक प्रकार की मिठाई वि. रस से पूर्ण, रसीली।

**रसभीना** वि. (तत्.) 1. आनंद से परिपूर्ण, आनंदमग्न जैसे- रसभीना समाज 2. जो शोरबा या अल्प रस से युक्त हो।

**रसभेद** पुं. (तत्.) पारे से तैयार की जाने वाली एक औषधि काव्य. रसों के भेदोपभेद, रस प्रकार।